1. मॉड्यूल और इसकी संरचना

मॉड्यूल विस्तार	
विषय का नाम	लेखा शास्त्र
पाठ्यक्रम नाम	अध्याय 2-भागीदारी-मूल अवधारणाओं के लिए लेखांकन (बारहवीं कक्षा)
मॉड्यूल का नाम / शीर्षक	भागीदारों के पूंजी खातों का रखरखाव
मॉड्यूल आईडी	Leac_10202_E-सामग्री 10202
पूर्व-आवश्यक ज्ञान	एकल स्वामित्व के पूंजी खाते की तैयारी के बारे में
उद्देश्य	इस पाठ के अध्ययन के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे: 1. पूंजी लेखा तैयार करने के तरीके 2. पूंजी लेखा को बनाने के विभिन्न तरीकों के बीच अंतर 3. पूँजी खाता - स्थिर पूँजी खाता विधि,और अस्थिर पूँजी खाता विधि, में मदो का स्थान
मुख्य शब्द	स्थिर पूँजी खाता विधि,, अस्थिर पूँजी खाता विधि, , चालू खाता

2. विकास दल

भूमिका	नाम	सम्बद्धता
राष्ट्रीय MOOC समन्वयक (NMC)	प्रो. अमरेंद्र पी बेहरा	सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
कार्यक्रम के समन्वयक	डॉ। रेजाउल करीम बारबुइया	सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
पाठ्यक्रम समन्वयक (सीसी) / पीआई	प्रो. शिप्रा वैद्य	डीईएसएस, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
पाठ्यक्रम के सह-समन्वयक/co- PI	डॉ निधि गुसाईं	सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
विषय वस्तु विशेषज्ञ	श्रीमती मधु वासवानी	दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड, नई दिल्ली
समीक्षा टीम	सुश्री प्रीति शर्मा	केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर 24, नोएडा।
अनुवादक	डॉ. अनिता अरोड़ा	ज्योति बी. एड कॉलेज, रामपुरा, फाजिल्का (पंजाब)
तकनीकी टीम	श्री शोभित सक्सेना सुश्री खुशबू शर्मा	सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

विषय – सूची

1. साझेदारों का पूँजी खाता
2. स्थिर पूँजी खाता विधि .
3. अस्थिर पूंजी लेखा विधि
4. स्थिर पूँजी खाता विधि तथा अस्थिर पूंजी लेखा विधि के बीच अंतर

साझेदारों के पूँजी खातों का अनुरक्षण

साझेदारों तथा फर्म से संबंधित सभी लेन-देन को उनके पूँजी खातों के माध्यम से खातों में अभिलेखित किया जाता है। इसके अंतर्गत पूँजी के रूप में लगाई गई धनराशि, पूँजी की निकासी, लाभ का भागए पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज,साझेदार का वेतन तथा साझेदार का कमीशन आदि शामिल होता है।

यहाँ पर दो विधियाँ हैं जिनमें साझेदारों के पूँजी खातों को अनुरक्षित किया जा सकता है। ये हैः

(i) स्थिर पूँजी विधि, तथा
(ii) अस्थिर पूँजी विधि

ए) स्थिर पूँजी विधि –

- स्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत साझेदारों की पूँजी तब तक स्थिर रहती है जब तक कि साझेदारों के समझौते के अनुसार अतिरिक्त पूँजी को सन्निविष्ट न किया जाए अथवा पूँजीके एक भाग की निकासी न की जाए। इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक भागीदार के लिए दो खाते बनाए हुए हैं।साझेदार के पूँजी खाते और साझेदार के चालू खाते
- सभी प्रकार के लेन-देन_ जैसे कि लाभ की भागीदारी, पूँजी पर ब्याज, आहरण , साझेदार का वेतन तथा साझेदार का कमीशन आदि एक अलग खाते में आलेखित किए जाते हैं,जिसे साझेदार का चालू खाता कहते हैं।
- साझेदारों के पूँजी खाते एक जमा शेष प्रदर्शित करते हैं जो कि साल-दर-साल तक ठीक वैसे ही शेष रह सकते हैं जब तक कि उनमें इस अवधि के दौरान अतिरिक्त पूँजी का सन्निवेश या आहरण न किया जाए।

स्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत पूँजी खाता एवं चालू खाता निम्नवत प्रदर्शित किया जाता हैः

साझेदार का पूँजी खाता

नाम **जमा**

विवरण	X ₹	Y ₹	**विवरण**	X ₹	Y ₹
नकद / बैंक खाता (पूंजी की निकासी)	xxx	xxx	बैलेंस b / d (प्रारंभिक शेष राशि)	xxx	xxx
शेष राशि c / d (समापन शेष)	xxx	xxx	कैश / बैंक खाता (अतिरिक्त पूंजी)	xxx	xxx
	xxx	xxx		xxx	xxx

साझेदारों के चालू खाते

नाम **जमा**

विवरण	X ₹	Y ₹	**विवरण**	X ₹	Y ₹
शेष राशि b / d (डेबिट ओपनिंग बैलेंस के मामले में),	xxx	xxx	**शेष राशि** b / d (क्रेडिट ओपनिंग बैलेंस के मामले में)	xxx	xxx
आहरण खाता के लिए			**साझेदारों की सैलरी**	xxx	xxx
आहरण ब्याज पर			**भागीदारों का कमीशन**	xxx	xxx
लाभ - हानि विनियोजन	xxx	xxx	**पूंजी पर ब्याज**	xxx	xxx
खाता (नुकसान में हिस्सेदारी)	xxx	xxx	**लाभ और हानि विनियोग** A / c		
शेष राशि	xxx	xxx	(लाभ में हिस्सेदारी)	xxx	xxx
(जमा,समापन शेष राशि पर)			**शेष राशि c / d**		
			(डेबिट क्लोजिंग बैलेंस के मामले में)	xxx	xxx
	xxx	xxx			
	xxx	xxx		xxx	xxx

- साझेदारों के पूँजी खाते एक जमा शेष प्रदर्शित करते हैं उसको बैलेंस शीट देनदारियों की ओर प्रदर्शित किया जाता है।
- चालू खाता नाम शेष या जमा शेष प्रकट कर सकता है। चालू खाते के तुलनपत्र (बैलेंस शीट) में नाम शेष को परिसंपत्ति की तरफ और जमा शेष यदि है तो उसको देनदारियों की ओर प्रदर्शित किया जाता है।

बी) अस्थिर पूँजी लेखांकन विधि-

अस्थिर पूंजी खाता विधि ,पूंजी खाता तैयार करने की वह विधि है जिसमें प्रत्येक भागीदार द्वारा योगदान की गई पूंजी की राशि परिवर्तनीय अथवा अपरिवर्तनशील हो सकती है । अस्थिर पूंजी खाता विधि के तहत, प्रत्येक भागीदार के लिए केवल एक खाता यानी **पूँजी खाता** ही रखा जाता है। सभी समायोजन जैसे लाभ और हानि की हिस्सेदारी, पूंजी पर ब्याज, निकासी , आहरण पर ब्याज, साझेदारों के लिए वेतन या कमीशन, आदि भागीदार के एक ही पूंजी खाते में दर्ज किए जाते हैं।

अस्थिर पूंजी लेखा विधि के तहत बनाए गए खाते का प्रारूप है:

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम **जमा**

विवरण	X ₹	Y ₹	विवरण	X ₹	Y ₹
शेष राशि b / d(डेबिट ओपनिंग बैलेंस के मामले में)	xxx	xxx	By Balance b/d *(In case of credit opening balance)*	xxx	xxx
निकासी खाते में -			By Cash/ bank A/c (Additional Capital)	xxx	xxx
निकासी खाते पर ब्याज -	xxx	xxx	By Salary to Partner	xxx	xxx
लाभ और हानि के लिए - विनियोग खाता (नुकसान में हिस्सेदारी)	xxx	xxx	By Commission to partner	xxx	xxx
			By Interest on Capital A/c		
शेष राशि c / d(क्रेडिट समापन शेष राशि के मामले में)-	xxx	xxx	By Profit & Loss Appropriation A/c	xxx	xxx
			(Share in Profit)	xxx	xxx
			By Balance c/d		
	xxx	xxx	*(In case of credit closing balance)*	xxx	xxx
					xxx
	xxx	xxx		xxx	xxx

पूंजी खातों का शेष डेबिट या क्रेडिट , स्थिति अनुसार हो सकता है।

क्रेडिट बैलेंस वाले पूँजी खातों को देनदारियों के पक्ष में दिखाया जाता है जबकि जिन पूँजी खातों में डेबिट बैलेंस (नाम शेष) है को बैलेंस शीट के परिसंपत्ति (asset) पक्ष पर दिखाया जाता है।

नोट: किसी भी निर्देश के अभाव में, कैपिटल अकाउंट बनाने लिए आमतौर पर अस्थिर पूंजी लेखांकन पद्धति का पालन किया जाता है।

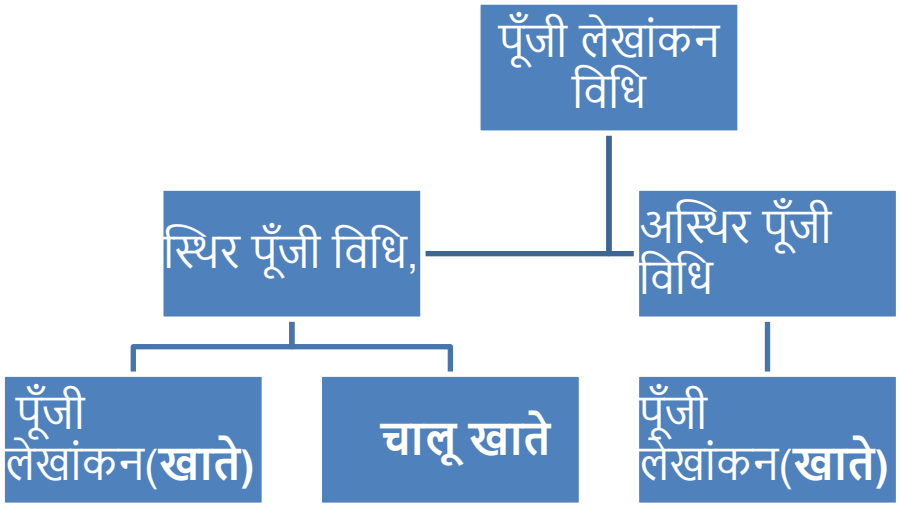

स्थिर पूँजी खाता विधि तथा अस्थिर पूंजी लेखा विधि के बीच अंतर

आधार	**स्थिर पूँजी खाता विधि**	**अस्थिर पूंजी लेखा विधि**
लेखा की संख्या	प्रत्येक भागीदार के लिए दो खाते होते है हैं: i. पूंजी खाता और ii. चालू खाता	प्रत्येक भागीदार के लिए केवल एक खाता रखा जाता है, जो कि पूंजी खाता है।
परिवर्तन की आवृत्ति	स्थिर पूँजी खाता में बकाया विशिष्ट परिस्थितियों में छोड़कर, नहीं बदलता है।	शेष (बैलेंस)समय-समय पर बदलता रहता है।
व्यवहारों का समायोजन	आहरण पर ब्याज, पूंजी पर ब्याज,वेतन, लाभ / हानि का हिस्साजैसे सभी समायोजन चालू खाते में किए जाते हैं।	आहरण पर ब्याज, पूंजी पर ब्याज, वेतन, लाभ / हानि का हिस्सा जैसे सभी समायोजन पूँजी खाते में किए जाते हैं।

संतुलन	पूँजी खाता हमेशा क्रेडिट बैलेंस दिखाता है।	अस्थिर लेखांकन में क्रेडिट और डेबिट बैलेंस भी दिखाया जा सकता है।

उदाहरण के लिए:

राघव और रोहित ने 01.04.2020 को पार्टनर के रूप में बिजनेस शुरू किया। राघव ने अपनी पूंजी के रूप में 40,000 और रोहित ने 25,000 का योगदान दिया। भागीदारों ने 2: 1 के अनुपात में अपने लाभ को साझा करने का निर्णय लिया। राघव 6,000 रुपये सालाना वेतन का हकदार था। पूंजी पर ब्याज @ 6% वार्षिक प्रदान किया जाना था। वर्ष के दौरान राघव ने 4,000 वापस ले लिए, रोहित ने 8,000 वापस ले लिए। पूंजी पर वेतन और ब्याज प्रदान करने के बाद लाभ 12,000 थे।

भागीदारों के पूंजी खाते तैयार करें:

i. जब पूँजिया परिवर्तित हो रही हैं
ii. जब पूँजिया निश्चित (स्थिर) हों

हल:

i) जब पूंजिया परिवर्तित हो रही हों

राघव और रोहित के पूंजी खाते

नाम **जमा**

विवरण	राघव ₹	रोहित ₹	विवरण	राघव ₹	रोहित ₹
निकासी /आहरण A/c	4,000	8,000	बैलेंस b/d A/c	40,000	25,000
			राघव के वेतन खाते पूंजी पर	6,000	-
बैलेंस c/d			ब्याज,A/c	2,400	1,500
	52,400	22,500	लाभ / हानि का हिस्सा A/c (Share in profit)	8,000	4,000
	56,400	30,500		56,400	30,500

ii) जब पूँजिया निश्चित (स्थिर) हों

भागीदार पूंजी खाता

नाम **जमा**

विवरण	राघव ₹	रोहित ₹	विवरण	राघव ₹	रोहित ₹
बैलेंस c/d	40,000	25,000	बैलेंस b/d	40,000	25,000
	40,000	25,000		40,000	25,000

भागीदार चालू खाते

नाम **जमा**

विवरण	Raghav ₹	Rohit ₹	विवरण	Raghav ₹	Rohit ₹
निकासी /आहरण A/c	4,000	8,000	राघव के वेतन खाते	6,000	–
बैलेंस c/d	12,400	–	पूंजी पर ब्याज, A/c	2,400	1,500
			लाभ / हानि का हिस्सा A/c (Share in Profits)	8,000	4,000
			बैलेंस c/d (Closing Balance)	–	2,500
	16,400	8,000		16,400	8,000